निवेदन ।

इस प्रेस से महर्षि वेदव्यासरचित सम्पूर्ण महाभारत के सर्वाङ्ग-सुन्दर सचित्र अनुवाद के मासिक रूप में प्रकाशित होने की सूचना पाठकों को दी जा चुकी है। तदनुसार उसका प्रथमाङ्क पाठकों के सामने है। इसके अनुवाद के सम्बन्ध में हमें तीन बातें कहनी हैं:—

(१) महाभारत का यह अनुवाद बहुत प्राचीन प्रामाणिक प्रति से किया गया है और उसी अर्थ को प्रधानता दी गई है जिसे महाभारत के प्रसिद्ध टीकाकार नील-कण्ठ पण्डित ने माना है। अतएव इसमें जो श्लोकाङ्क दिये गये हैं उनका मिलान अन्य आधुनिक प्रतियों के श्लोकाङ्कों से किया जायगा तो उसमें अन्तर पड़ने की सम्भावना है। श्लोकाङ्क इसलिए दे दिये गये हैं कि किसी को उक्त अभिप्राय मूल में देखना हो तो ढूँढ़ लें। किन्तु ऐसा करते समय अन्य प्रतियों के श्लोक आगे पीछे मिलेंगे। कथा के तारतम्य की दृष्टि से क्वचित् अध्यायों में भी अन्तर पड़ेगा।

(२) अनुवाद में शब्दों का अर्थ करने की अपेक्षा भाव को प्रधानता देने का प्रयास किया गया है। जो विशेषण पास ही, एक बार, आ चुके हैं वे दुहराये नहीं गये। कहीं पर संस्कृत के डेढ़ श्लोक का भाव एक वाक्य में पूरा हुआ है और कहीं पर इससे भी अधिक का। इसके सिवा कहीं कहीं एक एक श्लोक का अर्थ कई वाक्यों में हुआ है। इस कारण श्लोकाङ्क दस-दस के अन्तर पर दिये गये हैं,— एक, दो, तीन के क्रम से नहीं। हाँ, कहीं कहीं पर प्रसङ्गवश इस क्रम की रक्षा नहीं की गई है।

(३) अनुवाद की भाषा सरल रखने की चेष्टा की गई है जिसमें स्त्रियाँ और बालक तक इसको पढ़ और समझ सकें। फिर भी कहीं कहीं उच्च कोटि की भाषा का मिल जाना सम्भव है। महापुराण ही ठहरा, क़िस्से-कहानियों की किताब तो है ही नहीं। विशेषतः जहाँ धर्म की गूढ़ बातों का वर्णन है वहाँ ऐसा हुआ है। फिर भी मुख्य अर्थ को समझाने के लिए कुछ कसर नहीं रक्खी गई। जो बात प्रसङ्ग में नहीं है, किन्तु जिसका आगे या पीछे वर्णन हुआ है और जिसके बिना प्रसङ्ग अधूरा रहता है, उसका उल्लेख ब्रैकिटों [ ] के भीतर कर दिया गया है जिससे पढ़नेवालों को किसी प्रकार की अड़चन न हो।

प्रकाशक—

विषय-सूची।

विषय-सूची ।

रंगीन चित्रों की सूची।

श्री व्यासदेव